487 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 41
अष्टम् अंक
मार्च 2019

इस अंक में...

10 सम्पादकीय
12 राष्ट्रीय घटनाक्रम
18 प्रणब मुखर्जी, नानाजी देशमुख व भूपेन्द्र हजारिका को भारतरत्न
20 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
25 अंतरिम बजट (2019-20)
29 आर्थिक-वाणिज्यिक परिदृश्य
40 नवीनतम सामान्य ज्ञान
50 खेलकूद
54 रोजगार समाचार
55 युवा प्रतिभाएं
63 सिविल सेवा परीक्षा—2019 : एक प्रभावी तैयारी के लिए उठाएं कुछ शक्तिशाली कदम
66 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
69 स्मरणीय तथ्य
72 फोकस—(1) आरक्षण—3·0
75 (2) नए भारत हेतु रणनीति @ 75
80 (3) भारत में कौशल क्रांति
82 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
84 विश्व परिदृश्य
88 वाणिज्य लेख—ई-व्यापार प्रणाली : तथ्य और चुनौतियाँ
91 ऐतिहासिक लेख—असहयोग आन्दोलन एवं स्वराज दल
94 सामयिक लेख—एक देश, दो टाइम जोन
96 संघ लोक सेवा आयोग/राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित विभिन्न परीक्षाओं हेतु विशेष लेख—एक जनपद एक उत्पाद : एक विवेचन
101 समसामयिक लेख—महत्वपूर्ण राष्ट्रीय घटनाक्रम
104 हिन्दी की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति—विश्व हिन्दी सम्मेलन का ग्यारहवाँ पड़ाव मॉरीशस
107 कॉप-24- पोलैण्ड जलवायु सम्मेलन पर विशेष—वैश्विक तापमान वृद्धि को कम करने का लक्ष्य : पेरिस समझौते को 2020 तक लागू करने पर बनी सहमति
109 पर्यावरणीय लेख—आगामी पीढ़ी के लिए संसाधनों का सही संरक्षण व संचालन
111 कृषि आलेख—अनुबंध खेती की उपयोगिता
113 कृषि सम्बन्धी लेख—खाद्य एवं पोषण सुरक्षा : सफलताएं एवं चुनौतियाँ
115 सार संग्रह
119 सामान्य अध्ययन—(i) उ.प्र. पी.सी.एस. (प्रा.) परीक्षा, 2018
126 (ii) बिहार बी. एड. संयुक्त प्रवेश परीक्षा, 2018
133 आगामी सिविल सेवा (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
144 उत्तराखण्ड वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान
147 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
149 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न

विविध/सामान्य

151 वार्षिक रिपोर्ट 2017-18— नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के बढ़ते चरण : एक दृष्टि में
153 सामान्य जानकारी—सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी पर आधारित समसामयिक घटनाक्रम
156 तर्कशक्ति—आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित पी.ओ./एम. टी. (प्रा.) परीक्षा, 2018
159 संख्यात्मक अभियोग्यता— आई.डी.बी.आई. बैंक एक्जीक्यूटिव परीक्षा, 2018
166 क्या आप जानते हैं ?
167 अपना ज्ञान बढ़ाइए
168 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण से भारत जैसे विकासशील देश में असमानताओं में वृद्धि हुई है
170 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—लोकतन्त्र में 'नोटा' की सार्थकता
171 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक— 476 का परिणाम
173 English Language–Canara Bank P.O. Exam. 2018

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

सम्पादकीय

यशस्वी बनिए

एक समय की बात है, इन्द्र ब्राह्मण का रूप धारण करके दानशूर कर्ण के पास कवच और कुंडल माँगने आया. कर्ण इन कवच कुंडलों को पहने हुए ही जन्मा था. जब सूर्य ने जाना कि इन्द्र कर्ण से कवच-कुंडल माँगने जा रहा है, तो उसको चिन्ता हुई, क्योंकि कर्ण उसका पुत्र था और वह कर्ण को इस प्रकार वंचित होते हुए नहीं देखना चाहता था. निदान सूर्य ने कर्ण को पहले ही से तय सूचना देते हुए कहा, ''इसमें संदेह नहीं कि तू बड़ा दानी है, परन्तु यदि अपने कवच-कुंडल दान में दे देगा, तो तेरे जीवन की हानि हो जाएगी. इसीलिए तू इन्हें किसी को मत देना, क्योंकि मर जाने पर कीर्ति का क्या उपयोग–मृतस्य कीर्त्या किं कार्यम् ?'' सूर्य के वचन सुनकर कर्ण ने उत्तर दिया– ''जीवितेनामि मे रक्ष्या कीर्तितस्तद्विद्धि मे व्रतम''– अर्थात् जान भले ही चली जाए, तो भी कुछ परवाह नहीं, परन्तु अपनी कीर्ति की रक्षा करना ही मेरा व्रत है.

(महाभारत वनपर्व 299/38)

यद्यपि मनुष्य देह दुर्लभ है और इसे मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है तथापि यदि कीर्ति, यश, धर्म आदि किसी शाश्वत वस्तु की प्राप्ति करनी हो, तो अनेक सुधी एवं सिद्ध जनों के मतानुसार कर्तव्यपालन में प्राणों की भी आहुति आनंदपूर्वक दे देनी चाहिए. अपने महाकाव्य रघुवंश में महाकवि कालिदास ने लिखा है कि जब राजा दिलीप अपने गुरु वसिष्ठ की गाय की सिंह से रक्षा करने के लिए सिंह को अपना शरीर देने को तैयार होकर बोले– ''हमारे समान पुरुषों की इस पंच भौतिक शरीर के प्रति अनास्था रहती है. अतएव तू मेरे इस जड़ शरीर के बदले मेरे यश– स्वरूपी शरीर की ओर ध्यान दे (रघुवंश 2/57) यानी गाय को छोड़ दे– मेरे शरीर को खाले. कथा-सरित्सागर और नागानंद नाटक में यह वर्णन है कि सर्पों की रक्षा करने के लिए जीमूत-वाहन ने गरुड़ को स्वयं अपना शरीर अर्पण कर दिया था. मृच्छकटक नाटक में चारुदत्त कहता है–

न भीतो मरणादस्मि केवलं दूषितं यशः ।
विशुद्धस्य हि मे मृत्युः पुत्रजन्मसमः किल ।

(10/27)

राजा शिवि और ऋषि दधीचि की कथाओं का वर्णन किया गया है. राजा शिवि ने शरण गत कबूतर की प्राण रक्षा हेतु अपने शरीर का मांस श्येन पक्षी रूप यम (धर्म) राज को दिया और ऋषि दधीचि ने देवताओं के कल्याणार्थ उनके शत्रु वृत्रासुर के वध के लिए अपने शरीर की हड्डियाँ दान कर दी.